दैनिक भास्कर उज्जैन 26-10-2021

विक्रम के आंगन में आज से प्राचीन भारत में गणित व विज्ञान विषय पर अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन

उज्जैन | विक्रम विश्वविद्यालय व इंडियन एकेडेमी ऑफ फिजिकल साइंसेस, प्रयागराज की अगुवाई में तीन दिनी 27वें अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन (कोनियाप्स-27) का आयोजन मंगलवार से किया जाएगा। अधिवेशन का आयोजन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर 28 अक्टूबर तक विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित किया जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन के मुख्य समन्वयक कम्प्यूटर विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने बताया इंडियन एकेडेमी ऑफ फिजिकल साइंसेस, प्रयागराज द्वारा 26 साल से विज्ञान के विभिन्न आयामों पर अधिवेशन का आयोजन किया जाता है। इस बार के 27वें अधिवेशन का आयोजन विक्रम विश्वविद्यालय में किया जाएगा। इसका उद्देश्य आज के परिवेश मे युवाओं को प्राचीन भारत मे गणित एवं विज्ञान के अवदान एवं उपलब्धियों के बारे में अवगत कराना है। तीन दिनी अधिवेशन में प्राचीन भारत में गणित एवं विज्ञान पर शोधपत्रों का वाचन किया जाएगा। इसमें देश-विदेश के विख्यात गणितज्ञ, ज्योतिषी एवं वैज्ञानिक व्याख्यान देंगे।

ऑनलाइन अनावरण : अधिवेशन का ऑनलाइन अनावरण पद्मविभूषण डॉ रघुनाथ अनंत माशेलकर, पूर्व डीजी, सीएसआईआर, भारत सरकार के करकमलों से सोमवार को हुआ। कार्यक्रम में संरक्षक प्रो. पी.एन. पांडेय, सचिव आईएपीएस, प्रयागराज सहित देश-विदेश के अनेक विख्यात गणितज्ञ व वैज्ञानिक उपस्थिति थे।

दैनिक भास्कर
उज्जैन 27-10-2021

ऋग्वेद के सूत्रों के अनुसार ही किया इजिप्ट पिरामिड का निर्माण -डॉ. सिद्धार्थ

अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन : विक्रम विवि के कम्प्यूटर विज्ञान संस्थान में तीन दिनी आयोजन की शुरुआत

भास्कर संवाददाता | उज्जैन

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि उत्पति पूर्व की स्थिति का वर्णन है। भारत में कालगणना का इतिहास जिसमें ग्रहियों, गतियों के सूक्ष्म अध्ययन की परंपरा रही है। कालगणना पृथ्वी, चंद्र, सूर्य की गति के अंतर को पाटने की भी व्यवस्था अधिकमास से होती रही। ऋग्वेद के सूत्रों के अनुसार ही इजिप्ट के पिरामिड का निर्माण किया है।

हैदराबाद के वैज्ञानिक डॉ. बीजी सिद्धार्थ ने यह बात कही। वे विक्रम विवि और इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज की अगुवाई में मंगलवार से तीन दिनी 27वें अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन के शुरुआती सत्र को संबोधित कर रहे थे। इसका विषय प्राचीन भारत में गणित एवं विज्ञान विषय है। मुख्य समन्वयक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने बताया शुभारंभ सत्र के अतिथि जयंत सहस्त्रबुद्धे, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, विज्ञान भारती, मुख्य वक्ता वैज्ञानिक डॉ. बीजी सिद्धार्थ, हैदराबाद, तेलंगाना, आमंत्रित वक्ताओं में वाणी वितान संस्थान के संस्थापक सतना मप्र के डॉ. सुद्युम्ना आचार्य, चीन मेडिकल विवि, ताइवान के प्रो. एरदल कारापिनार और बेंगलुरु के गणितज्ञ प्रो. बालचंद्र राव थे। अध्यक्षता कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने की। आयोजन दो तकनीकी सत्रों में हुआ।

जब विश्व हजार की संख्या की गणना कर रहा था, हम पदम तक पहुंच गए थे

अतिथि सहस्त्रबुद्धे ने कहा भारत ने हजारों वर्ष पहले ही विज्ञान में शोध शुरू कर दिए थे। पश्चिमी वैज्ञानिकों ने अपने शोध ग्रंथों में भारतीय शोध को आधार बनाया है। जब विश्व हजार की संख्या की गणना कर पा रहा था, हम शंख और पदम तक की गणना कर चुके थे। ऋषियों ने इसके लिए जीवन को खपाया है। भृगु, वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, गर्ग, शौनक, शुक्र, नारद, कश्यप, अगस्त्य, परशुराम, द्रोण, दुर्ग, तमस हुए जिन्होंने विमान विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, रसायन विज्ञान में काम किया।

आर्यभट्ट पहले वैज्ञानिक, जिन्होंने बताया पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है

डॉ. आचार्य ने कहा आर्यभट्ट ही ऐसे प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है। सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण होने के कारण बताए। वैज्ञानिक केप्लर ने ग्रहों की दूरी बताई है। दूरी मापने में उन्होंने भी आर्यभट्ट के सिद्धांतों का आधार बनाया है। सूर्य सिद्धान्त में आर्यभट्ट उल्लेख करते हैं कि चंद्रमा की कक्षा 324000 योजन है। आर्यभट्ट ने भास्कर प्रथम, महाभास्कर, लघु भास्कर और भाष्यों की रचना कर वर्तमान युग में शोध को आधार प्रदान किया है।

जब विश्व हजार की संख्या की गणना कर रहा था, हम शंख और पदम तक की गणना कर चुके थे

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कम्प्युटर विज्ञान संस्थान मे 3 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ

उज्जैन माधव एक्सप्रेस। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन एवं इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज प्रयागराज के संयुक्त तत्त्वाधान में 26 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक आयोजित हो रही 27वीं अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन प्राचीन भारत मे गणित एवं विज्ञान विषय का शुभारंभ हुआ।

शुभारंभ-सत्र के मुख्य जयंत सहस्त्रबुद्धे राष्ट्रीय संगठन मंत्री विज्ञान भारती, मुख्य वक्ता देश के विख्यात वैज्ञानिक प्रो. डॉ बीजी सिद्धार्थ, हैदराबाद तेलंगाना, आमंत्रित वक्ता के रूप में वाणी वितान संस्थान के संस्थापक मध्यप्रदेश सतना के डॉ सुषुम्ना आचार्य, चीन मेडिकल विश्वविद्यालय, ताइवान के प्रो.एरदल कारापिनार एवं बेंगलुरु के विख्यात गणितज्ञ प्रो. बालचन्द्र राव थे। अधिवेशन की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने की। इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज के प्रो. ओंकारलाल श्रीवास्तव एवं विज्ञान भर्ती के संगठन मंत्री प्रजातंत्र गंगेले भी उपस्थित थे।

अधिवेशन के मुख्य समन्वयक एवं कंप्यूटर विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ उमेश कुमार सिंह ने कार्यक्रम के आरंभ मे विषय प्रवर्तन करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला एवं स्वागत भाषण में सभी आमंत्रित वक्ताओं का विस्तार से परिचय कराया एवं इस अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी की संकल्पना स्पष्ट की। मुख्य अतिथि जयंत सहस्त्रबुद्धे ने भारत की विशाल वैज्ञानिक परंपरा का उल्लेख करते हुए बताया कि भारत ही ऐसा एक मात्र देश है जिसने विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शोध हजारो वर्ष पूर्व ही प्रारम्भ कर दिया गया था। इस देश विशाल वैज्ञानिक परंपरा ने विश्व को मुख्य अवधारणा दी है जिसको आधार बनाकर वर्तमान में शोध कार्य संपादित हो रहे हैं। आपने बताया कि पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी अपने शोध ग्रंथो में भारत के वैज्ञानिकों के शोध को आधार बनाया है। जब विश्व हजार की संख्या की गणना कर पा रहा था हम शंख और पदम तक कि गणना कर चुके थे। वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन अनुसंधान की परंपरा प्राचीन काल से चली आई है अनेक ऋषियों ने इसके लिए जीवन को खपाया है। भृगु, वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, गर्ग शौनक, शुक्र, नारद, दृढ़ीनाथ, कश्यप, अगस्त्य, परशुराम, द्रोण, दुर्ग, तमस आदि हुए जिन्होंने विमान विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, रसायन विज्ञान, अस्त्र शस्त्र रचना, जहाज निर्माण और जीवन के सभी क्षेत्रों में काम किया।

देश के विख्यात वैज्ञानिक डॉ वी जी सिद्धार्थ ने उद्बोधन में 'ऋग्वेद में उल्लेखित भूगोल, कालक्रम और ज्योतिष विषय में यह बताया गया कि हमारे ऋषि मुनि द्वारा सुनकर और अनुभव के आधार पर ज्ञान को संग्रहित करना और वेदों के रूप में सहज कर रखना और उन सिद्धातों को अपने कार्य मे उपयोग करना सिखाया। उन्होने ऋग्वेद के सूत्र: आ नो भद्रा: कृतवो यन्तु विश्वत: का उल्लेख करते हुए बताया कि ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया कि तब न सत था न असत था, न परमाणु था न अवकाश, तो उस समय क्या था? तब न मृत्यु थी, न अमरत्व था, न दिन था, न रात थी। उस समय स्पंदन शक्ति युक्त वह एक तत्व था।भारत मे कालगणना का इतिहास जिसमे ग्रहियों गतियो का सूक्ष्म अध्ययन करने की परंपरा रही हैं। तथा कालगणना पृथ्वी, चंद्र, सूर्य की गति के अंतर को पाटने को भी व्यवस्था अधिक मास द्वारा होती रही। उन्होने बताया की- ऋग्वेद के सूत्रों के अनुसार ही इजिप्त के पिरामिड का निर्माण किया गया है। आमंत्रित वक्ता के रूप में वाणी वितान संस्थान के संस्थापक मध्यप्रदेश सतना के डॉ सुषुम्ना आचार्य ने अपने विषय महर्षि आर्यभट्ट का गणित और भौतिकी में अतुल्य योगदान विषय पर आपने बताया कि ज्योतिर्विज्ञान और गणित क्षेत्र में अविष्कारक के रूप मे आर्यभट्ट के रूप में जाने जाते हैं। आर्यभट्ट के प्रयासों से ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका। आर्यभट्ट ही ऐसे प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे जिन्होंने यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है। इन्होंने ही सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण होने के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला है। कई वैज्ञानिकों ने तर्क दिए उस समय इतने समृद्ध संसाधन भी उपलब्ध न होने पर भी इतनी सटीक कालगणना अपने आप मे अकल्पनीय हैं। आर्यभट्ट द्वारा गणित में कई समीकरण बताये गए जिनको आधार बनाकर भौतिक विज्ञान में कई प्रमेयों को सिद्ध किया जा सका। पाश्चात्य जगत के विख्यात वैज्ञानिक केप्लर ने ग्रहों की दूरी बतायी हैं। दूरी मापने में उन्होंने भी आर्यभट्ट के सिद्धांतों का आधार बनाया है। आर्यभट्ट ने यह सिद्ध करके बताया था कि चंद्रमा की कक्षा कितनी उसका निर्धारण चंद्रमा की गति और परिभ्रमण के समय के आधार पर बताया जा सकता हैं। सूर्य सिद्धान्त में आर्यभट्ट उल्लेख करते है कि चंद्रमा की कक्षा 324000 योजन है। आर्यभट्ट ने भास्कर प्रथम, महाभास्कर, लघुभास्कर एवं भाष्यों की रचना कर वर्तमान युग मे शोध को आधार प्रदान किया है। अतिथि वक्ता प्रो. बालचन्द्र राव ने कहा की आर्यभट्ट के अधूरे कार्य को भास्कर प्रथम ने सम्हाला और ग्रहों के देशांतर, ग्रहों के परस्पर तथा प्रकाशमान नक्षत्रों से संबंध, ग्रहों का उदय और अस्त होना तथा चंद्रकला जैसे विषयों की विस्तृत विवेचना की। भास्कर ने आर्यभट द्वारा प्रणीत त्रिकोणमितीय समीकरणों को विस्तृत किया तथा आर्यभट की तरह इस सही निष्कर्ष पर पहुंचे कि पाइ एक अपरिमेय संख्या है। उन्होंने बताया की ज्योतिर्विद गणितज्ञ वाराहमिहिर उज्जैन ने आर्यभट्ट के त्रिकोणमितीय सूत्रों को भंडार बढ़ाया।

अपने उद्बोधन मे प्रो. राव ने आगे बताया की चंद्र ग्रहण का एक सटीक मानचित्र विकसित करने के दौरान आर्यभट्ट को इनफाइना टसिमल की परिकल्पना प्रस्तुत करना पड़ी। अर्थात् चंद्रमा की अति सूक्ष्मकालीन या लगभग तात्कालिक गति को समझने के लिए असीमित रूप से सूक्ष्म संख्याओं की परिकल्पना करके उन्होंने उसे एक मौलिक अवकल समीकरण के रूप में प्रस्तुत किया। आर्यभट के समीकरणों को 10वीं सदी में मंजुला ने और 12वीं सदी में भास्कराचार्य ने विस्तार पूर्वक व्याख्या की। प्रो. राव ने आगे बताया की भास्कराचार्य 12वीं सदी के भारतीय गणित के पथ प्रदर्शक थे जो गणितज्ञों की एक लम्बी परंपरा के उत्तराधिकारी थे और उज्जैन स्थित वेधशाला के मुखिया थे। उन्होंने 'लीलावती' और 'बीजगणित' जैसी गणित की पुस्तकों की रचना की तथा 'सिद्धान्तशिरोमणि नामक ज्योतिषशास्त्र की पुस्तक लिखी। अपने सिद्धांत शिरामणि में उन्होंने परिकल्पित किया कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण बल है। डॉ. बालचन्द्र राव ने विस्तार से समझाया की भास्कराचार्य के सूत्रो का किस प्रकार से भूगोल में उपयोग किया गया , ग्रहीय औसत गतियां, ग्रहों के उत्केंद्रीय अधिचक्र नमूना, ग्रहों का प्रथम दर्शन, मौसम, चंद्रकला आदि विषयों पर प्रकाश डाला एवं उन्होंने ज्योतिषीय यंत्रों और गोलकीय त्रिकोणमिति की भी विवेचना की। मुख्य वक्ता चीन मेडिकल विश्वविद्यालय, ताइवान के प्रो.एरदल कारापिनार ने गणित की नवीन विधाओ पर विस्तृत प्रकाश डाला एवं बताया की भारत के गणितीय सूत्रो के आधार पर अनेकों नवीन विधाओ का विकास हुआ है। उन्होंने फ़िक्स्ड पॉइंट सिधान्त के क्षेत्र मे नवीन शोध पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. अखिलेश पांडेय ने सभी आमंत्रित वक्ताओं का स्वागत करते हुए बताया की इस संगोष्ठी की मेजबानी करके विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन गर्व महसूस कर रहा हैं। यह संगोष्ठी भारतीय परंपरा के ऋषि मुनियो द्वारा किये गए अतुलनीय कार्य को वर्तमान समय में स्थापित करेगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गीतिका सिंह ने किया एवं तकनीकी संचालन-डॉ. शेखर दिसावल ने किया।

अधिवेशन के शुभारंभ एवं तकनीकी सत्रो की रिपोर्ट:-मुख्य एवं आमंत्रित उद्बोधन के बाद दो तकनीकी सत्रो का आयोजन किया गया। जिसमे देश के शोधकर्ताओ, शिक्षको, गणितज्ञों, वैज्ञानिको द्वारा शोध पत्रो का वाचन किया गया। आज 35 से अधिक शोध पत्रो का वचन किया गया। तकनीकी सत्रो का संचालन: डॉ. प्रज्ञा सिंह एवं डॉ. किर्ति दीक्षित ने किया। तकनीकी संचालन डॉ. भूपेंद्र पाण्ड्य एवं डॉ. ब्रहमदत्त शुक्ल ने किया। शुभारंभ सत्र के अंत मे आभार डॉ. संदीप कुमार [illegible] ने किया।

मध्यप्रदेश के 66वें स्थाप[illegible] प्यारा मध्यप्रदे[illegible]

उज्जैन माधव एक्सप्रेस [illegible] टी द्वारा मध्यप्रदेश के 66वें स्थाप[illegible] प्यारा मध्यप्रदेश' विषय पर निबंध [illegible] को सेंट मदार स्कूल मदार गेट में [illegible]

संस्था संयोजक हाजी मोहम्मद [illegible] सचिव पंकज जायसवाल ने बताया जो भी छात्र-छात्रा प्रतियोगि[illegible] शामिल होना चाहते हैं वह अपना पंजीयन 28 अक्टूबर तक संस्था कार्यालय अमरपुरा पर करा लें। प्रतियोगिता में मिडिल ग्रुप के छात्र-छात्राओं को शामिल किया जाएगा।

संस्था अध्यक्ष मोहम्मद इकबाल उस्मानी एवं उपाध्यक्ष समीर उल हक ने बताया प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतियोगियों के अलावा सभी प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार संस्था द्वारा दिए जाएंगे। उपरोक्त जानकारी प्रचार सचिव चेतन ठक्कर ने दी। सादर प्रकाशनार्थ, इकबाल उस्मानी,93026 39292 ।

दैनिक भास्कर

उज्जैन 28-10-2021

खगोल विज्ञान वेद का नेत्र, सृष्टि में होने वाले व्यवहार का निर्धारण काल से होता है -डॉ. पांडेय

अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन : दूसरे दिन 40 शोध पत्रों का वाचन, 5 विशेषज्ञों ने साझा किए विचार

भास्कर संवाददाता | उज्जैन

खगोल विज्ञान को वेद का नेत्र कहा है। सृष्टि में होने वाले व्यवहार का निर्धारण काल से होता है। काल का ज्ञान ग्रहीय गति से होता है। प्राचीन काल से खगोल विज्ञान वेदांग का हिस्सा रहा है।

बनारस हिंदू विवि के संस्कृत विभाग के पूर्व प्रमुख डॉ. रामचंद्र पांड्ेय ने यह बात कही। वे विक्रम विवि और इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज की अगुवाई में कंप्यूटर विज्ञान संस्थान में ऑनलाइन आयोजित अधिवेशन को संबोधित कर रहे थे। प्राचीन भारत में गणित एवं विज्ञान विषय पर अधिवेशन के दूसरे दिन तकनीकी सत्रों में 40 से अधिक शोध पत्रों का वाचन किया। वक्ता सत्र की अध्यक्षता प्रो. आरके छजलानी ने की।

राजा परीक्षित के प्रश्न पर शुकदेव ने बताया काल का अर्थ

प्रथम सत्र में प्राचीन भारत में गणित विषय पर व्याख्यान में गणित के विद्वान डॉ. अरुण कुमार उपाध्याय, भुवनेश्वर ने श्रीमद्भागवत के प्रसंग को बताते हुए कहा जब राजा परीक्षित शुकदेव से पूछते हैं काल क्या है? उसका सूक्ष्मतम और महत्तम रूप क्या है? तब उत्तर मिला कि विषयों का रूपांतरण बदलना ही काल कारक है। उसी को निमित्त बनाकर वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है।

जोड़ वृद्धि है और घटाना ह्रास : पंजाब विवि के प्रो. विनोद कुमार मिश्रा ने कहा कि भास्कराचार्य अपनी पुत्री लीलावती से संवाद करते हुए कहते हैं कि इन सभी परिक्रमों के मूल में दो ही मूल परिक्रम है- वृद्धि और ह्रास। जोड़ वृद्धि है और घटाना ह्रास। इन्ही दो मूल क्रियाओं से संपूर्ण गणित शास्त्र व्याप्त है।

40 से अधिक शोध पत्रों का वाचन, 5 विषय विशेषज्ञों के हुए व्याख्यान

शून्य और अनंत गणित के दो अनमोल रत्न, इनके बिना गणित कुछ भी नहीं

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ उज्जैन
www.alokottar.in

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन एवं इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 27वीं अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन प्राचीन भारत मे गणित एवं विज्ञान विषय के दूसरे दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में 40 से अधिक शोध पत्रों का वाचन किया गया। अधिवेशन के मुख्य समन्वयक ने बताया की आमंत्रित वक्ता सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर.के. छल्लानी ने की एवं प्रो. अखिलेश कुमार पांडे, कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय ने प्रतिभागियों को प्रेरित किया। दूसरे दिन संगोष्ठी 27 अक्टूबर को प्रथम सत्र में प्राचीन भारत में गणित विषय पर व्याख्यान देते भुवनेश्वर के गणित के विद्वान डॉ. अरुण कुमार उपाध्याय ने काल गणना के महत्व को प्रतिपादित करते हुए बताया की सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई तथा यह सृष्टि कब तक रहेगी यह प्रश्न मानव मन को युगों से मथते रहे है। इनका उत्तर पाने के लिए सब से पहले काल की गणना को समझना पड़ेगा।

श्रीमद्भागवत के प्रसंग को बताते हुए उन्होंने बताया की कि जब राजा परीक्षित महामुनि शुकदेव से पूछते है काल क्या है? उसका सूक्ष्म और महत्तम रूप क्या है? तब इस प्रश्न का जो उत्तर देते हैं वह आश्चर्यजनक है क्योंकि आज के आधुनिक युग में हम जानते हैं कि काल अमूर्त तत्व है, घटने वाली घटनाओं से हम उसे जानते है आज से हजारों वर्ष पूर्व सुखदेव मुनि ने कहा विषयों का रूपांतरण बदलना ही काल कारक है उसी को निमित्त बनाकर यह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता हैउ उन्होंने आगे बताया की शुकमुनी की गणना के अनुसार 1 दिन रात में 3280500000 परमाणु काल होता है तथा एक दिन-रात में 86400 सेकंड होते हैं इसका अर्थ मुहूर्त माप वाले 1 परमाणु काल =1 सेकंड का 37968 वा हिस्सा है।

भारतीय काल गणना की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने उल्लेख किया कि खगोल पिंडों की गति के सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर प्रतिपल, प्रतिदिन होने वाले उसके परिवर्तनों, उसकी गति के आधार पर जाने ठोस वैज्ञानिक सच्चाई के आधार पर निर्धारित हुई है। जबकि आज विश्व में प्रचलित ईस्वी सन की काल गणना में केवल एक बात वैज्ञानिक है कि उसका वर्ष पृथ्वी से सूर्य की परिक्रमा करने में लगने वाला समय पर आधारित है। जबकि भारतीय गणना का प्रतिक्षण प्रतिदिन खगोलीय गति से संबंध है। हमारे पूर्वजों ने जहां खगोलीय गति के आधार पर काल मापन किया है वहीं काल की अनंत यात्रा और वर्तमान समय तक उसे जोड़ना तथा समाज में सर्व सामान्य व्यक्ति को इसका ध्यान रहे इसके हेतु एक अद्भुत व्यवस्था भी की थी। जिसको और साधारण तौर पर हमारा

ध्यान नहीं जाता हमारे देश में कोई भी कार्य होता हो चाहे वह भूमि पूजन हो, वास्तुनिर्माण का प्रारंभ हो, गृह प्रवेश हो, जन्म विवाह या कोई भी कार्य हो वह करने से पहले कुछ धार्मिक विधि करते हैं। उसमें सबसे पहले संकल्प कराया जाता है वह संकल्प मंत्र ही अनंत काल से आज तक की समय की स्थिति को बताने वाला मंत्र है। उन्होंने कहा की जिसकी गणना की जा सके वह ही गणेश हैं और जिसको मापा न जा सके अर्थात स्वर, लय, भाषा, स्वाद उसे सरस्वती कहा गया हैं। गणित शास्त्र की परम्परा भारत में बहुत प्राचीन काल से ही रही है। इस गणित के महत्व को प्रतिपादित करने वाला एक श्लोक प्राचीन काल से प्रचलित है। यथा शिखा मयूराणाम नागानां मणयो यथा। तद्वद् वेदान्गशास्त्रनाम गणितं मूर्धनिस्थितम। अर्थात जैसे मोरों में शिखा और नागों में मणि सबसे ऊपर होती है उसी प्रकार वेदांग और शास्त्रों में गणित सर्वोच्च स्थान पर स्थित है। पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार मिश्रा ने अपने संबोधन में कहा कि भास्कराचार्य ने अपने पुत्री लीलावती से संवाद करते हुए कहते है की इन सभी परिकर्मों के मूल में दो ही मूल परिक्रम है, वृध्दी और ह्रास, जोड़ वृध्दी है और घटाना ह्रास है, इन्हीं दो मूल क्रियाओं से सम्पूर्ण गणित शास्त्र व्याप्त हैंह्र शून्य और अनंत गणित के दो अनमोल रत्न है, रत्न के बिना जीवन चल सकता है किन्तु शून्य और अनन्त के बिना गणित कुछ भी नहीं है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के संस्कृत विभाग के पूर्व प्रमुख डॉ रामचंद्र पाण्डेय जी ने अपने उद्बोधन में बताया की खगोल विज्ञान को वेद का नेत्र कहा गया है क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि में होनेवाले व्यवहार का निर्धारण काल से होता है और काल का ज्ञान ग्रहीय गति से होता है। अतः प्राचीन काल से खगोल विज्ञान वेदांग का हिस्सा रहा हैउ ऋग्वेद आदि ग्रंथों में ऋतु परिवर्तन, नक्षत्र, सौर मास, मल मास, आकाश चक्र, सूर्य की महिमा, कल्प का माप आदि के सन्दर्भ में अनेक उद्धरण मिलते है। डार अस सलाम विश्वविद्यालय, तंजानिया के प्रो. संतोष कुमार ने कहा की ब्रह्मांड की विशालता का भी हमारे पूर्वजों ने अनुभव किया था। आजकल ब्रह्मांड की विशालता को मापने हेतु प्रकाश वर्ष की इकाई का उपयोग किया जाता है। प्रकाश एक सेकंड में 3 लाख किलोमीटर की गति से भागता है। इस गति से भागते हुए एक वर्ष में जितनी दूरी प्रकाश तय करेगा उसे प्रकाश वर्ष कहा जाता है। इस पैमाने से आधुनिक विज्ञान बताता है की हमारी आकाश गंगा, जिसे मिल्की वे कहा जाता है, इसकी लम्बाई एक लाख प्रकाश वर्ष है तथा चौड़ाई दस हजार प्रकाश वर्ष है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की प्रोफेसर निधि हांडा ने अपने वक्तव्य में वैदिक गणित में शुल्व सूत्र को लेकर जानकारी प्रदान की उन्होंने कहा यजुर्वेद शाखा के श्रौतसूत्रों का अंतिम प्रकरण शुल्वसूत्र का होता है। अब तक नौ आचार्यों द्वारा लिखे हुए शुल्वसूत्र उपलब्ध हैं। किंतु बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, और कात्यायन आचार्यों के शुल्वसूत्रों अपना विशेष महत्व रखता है। बौधायन शुल्वसूत्र में श्येन, अलज, प्रउग, रथचक्र, कूर्म इत्यादि तेरह चितियों का निर्माण करने की शास्त्रशुद्ध जानकारी दी है। बौधायन शुल्वसूत्र सभी सूत्रों से सबसे बड़ा सूत्र है, यह व्यवस्थित लिखा हुआ है और सबसे प्राचीन है।

दैनिक भास्कर

उज्जैन 29-10-2021

भारत उपासना की भूमि, भाषा की जन्मभूमि व इतिहास की माता -डॉ. यादव

विक्रम विवि व इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज का आयोजन

उज्जैन | भारत उपासना पंथों की भूमि है। यह मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी और परंपरा की पर दादी है। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव ने यह बात कही। वे विक्रम विवि व इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल सांइसेज, प्रयागराज के तीन दिनी आयोजन को ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। अतिथि विज्ञान भारती के संगठन मंत्री प्रजातंत्र गंगेले ने कहा इतिहास में भारत मात्र धर्म, दर्शन, तत्वज्ञान और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों में ही नही अपितु व्यापार, व्यवसाय, कला कौशल में भी अग्रणी है। अधिवेशन के मुख्य समन्वयक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने युवा वैज्ञानिक सम्मेलन की अवधारणा और शोध की विभिन्न विधाओं के बारे में बताया। अध्यक्षता कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांड्ेय ने की। तकनीकी सत्र के वक्ता डॉ. जयनारायण सिंह, आचार्य, बेरी विवि, मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका ने कहा भारतीय गणितज्ञ नरेंद्र कृष्ण कर्मकार ने 28 वर्ष की आयु में ही कर्मकार एलगोरिदम का आविष्कार किया था। इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ फिजिकल साइंसेज के प्रो. ओंकारलाल श्रीवास्तव ने भारत की प्राचीन कला क्रिप्टोग्राफी के बारे में बताया। मुनि डॉ. संयमरत्न विजय महाराज ने कहा जैन दर्शन आत्मवादी, आशावादी और कर्मवादी है। जैन दर्शन में पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति में मनुष्य के भांति संवेदना माना है।

भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है

'प्राचीन भारत में गणित एवं विज्ञान' विषय पर हुए अधिवेशन का समापन

उज्जैन। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन एवं इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में 26 से 28 अक्टूबर तक आयोजित 27वें अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन प्राचीन, भारत में गणित एवं विज्ञान विषय के तीसरे दिन भी आमंत्रित वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। अधिवेशन के प्रारम्भिक सत्र मे मुख्य समन्वयक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने अंतिम सत्र में होने वाली युवा वैज्ञानिक सम्मेलन की अवधारणा एवं शोध के विभिन्न विधाओं से संबन्धित व्याख्यान प्रदान किया।

तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. जयनारायण सिंह, आचार्य, बैरी विश्वविद्यालय, मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका थे। डॉ. सिंह ने अपने उद्बोधन मे रैखिक प्रोग्रामिंग के लिए सबसे पहले बहुपद समय के एल्गोरिदम के विभिन्न आयामों को विस्तार मे समझाया। नरेन्द्र कृष्ण कारमरकर की ने महज 28 वर्ष की आयु मे ही कर्मकार एल्गोरिथम का आविष्कार किया था। उससे पहले जटिल गणितीय समस्याओं को सुलझाने में जो एल्गोरिथम प्रयोग में लाया जाता था। वे उतने उपयोगी नहीं थे और काफी धीमे होने के वजह से वक्त काफी लगता था। कर्मकार का प्रचलित एल्गोरिथम की अपेक्षा 100 गुना तक तीव्र था। इंटरनेशनल अकेदेमी ऑफ फिजिकल साइन्स के प्रो. ओंकारलाल श्रीवास्तव ने अपने उपद्बोधन में भारत की प्राचीन कला क्रिप्टोग्राफी पर अपने उद्बोधन दिया। आज के युग में सूचनाओं की सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफी के अनुप्रयोगों को विस्तार से समझाया। प्राचीन काल में गुप्तचरों के माध्यम से सूचना का आदान प्रदान क्रिप्टोग्राफी अर्थात छुपी हुई भाषा के प्रयोग कर के किया जाता था।

तकनीकी सत्र के अन्य वक्ता मुनि डॉ संयमरत्न विजय महाराज साहब ने जैन दर्शन के विषय मे अपने उद्बोधन में उलेख किया कि जैन दर्शन आत्मवादी, आशावादी और कर्मवादी है। जैन दर्शन आत्म और कर्म के संयोग को स्वीकार करता है। जैन दर्शन की यह विशेषता है कि उसने धर्म, दर्शन के साथ विज्ञान को भी महत्वपूर्ण माना हैं। जैन दृष्टि से सृष्टि का काल, अनादि और अनंत है, वैज्ञानिक डार्किंग भी काल के संबंध में सृष्टि की यही स्थिति स्वीकार करते हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भौतिकी के प्रोफेसर रामप्रसाद प्रजापति ने अपने विषय उज्जैन के वैज्ञानिकों की विशाल परंपरा का उल्लेख करते हुए बताया कि भारतीय वैदिक ज्ञान प्रणाली ने इस ब्रह्मांड के विकास के सिद्धांत और गणित और खगोल विज्ञान के मौलिक नियमों के बारे में जानने के लिए पूरी दुनिया को सामने रखा है।

डॉ. प्रजापति ने कहा की 1884 में, ग्रीनविच को प्रमुख मध्याह्न रेखा के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया, देशांतर के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक जहां से पूरे विश्व समय की गणना जीएमटी के रूप में की जाती है। इससे पहले, उज्जैन को भारत में एक समय के लिए केंद्रीय मध्याह्न रेखा माना जाता था और विष्णुधर वाकणकर ने डोंगला को केंद्र स्थान के रूप में पहचाना। चूंकि उज्जैन प्राचीन काल में भारतीय खगोल विज्ञान का केंद्र और समय माप के लिए केंद्रीय स्थान था, इसलिए समय को डीएमटी के रूप में फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए, जीएमटी के रूप में नहीं। अंतिम तकनीकी सत्र में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के अंतर्गत 16 युवा वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। 27वीं अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन सत्र के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव थे। समापन सत्र की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपती प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने की। विशिष्ट अतिथि– भारतीय विज्ञान भारती, मालवा प्रांत के संगठन मंत्री प्रजातन्त्र गंगेले, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलसचिव प्रशांत पौराणिक, इंटरनेशनल एकेदेमी ऑफ फिजिकल साइन्स के प्रतिनिधि डॉ. ओंकार लाल श्रीवास्तव, शिक्षकगण, अतिथिगण उपस्थित थे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मोहन यादव ने अपने उद्बोधन में भारत के गौरवशाली विज्ञान परंपरा का उलेखित करते हुए कहा कि भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप विज्ञान भारती के संगठन मंत्री प्रजातन्त्र गंगेले ने अपने उद्बोधन में इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इतिहास में भारत मात्र धर्म, दर्शन, तत्वज्ञान एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों में ही नहीं अपितु व्यापार, व्यवसाय, कला कौशल में भी अग्रणी हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने सभी को सफल आयोजन की बधाई देते हुए भविष्य में भी इस प्रकार की शोध संगोष्ठी के आयोजन की संख्या बढ़ेगी ऐसा विश्वास प्रकट किया। आभार संस्थान के शेखर दिसावल ने माना।

'प्राचीन भारत में गणित एवं विज्ञान' विषय पर हुए 27वें अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन

भारत उपासना पंथो की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ उज्जैन
www.elokottar.in

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन एवं इंटरनेशनल अकादमी ऑफ फिजिकल साइंसेज, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में 26 से 28 अक्टूबर तक आयोजित 27वें अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन 'प्राचीन भारत मे गणित एवं विज्ञान विषय के तीसरे दिन भी आमंत्रित वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। अधिवेशन के प्रारम्भिक सत्र मे मुख्य समन्वयक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने अंतिम सत्र मे होने वाली युवा वैज्ञानिक सम्मेलन की अवधारणा एवं शोध के विभिन्न विधाओं से संबन्धित व्याख्यान प्रदान किया। आमंत्रित वक्ता सत्र की अध्यक्षता प्रो. अखिलेश कुमार पांडे, कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय ने की।

तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. जयनारायण सिंह, आचार्य, बैरी विश्वविद्यालय, मियामी, फ्लोरिडा, अमेरिका थे। डॉ. सिंह ने अपने उद्बोधन मे रैखिक प्रोग्रामिंग के लिए सबसे पहले बहुपद समय के एल्गोरिदम के विभिन्न आयामो को विस्तार से समझाया। उन्होंने रैखिक प्रोग्रामिंग के क्षेत्र मे भारतीय गणितज्ञ नरेन्द्र कृष्ण करमाकर के महत्व को प्रतिपादित करते हुए बताया कि करमाकर का गणित के क्षेत्र में अमूल्य योगदान माना जाता है। इन्हें गणित के जटिल एल्गोरिथम 'कर्मकार एल्गोरिथम' के लिए याद किया जाता है। नरेन्द्र कृष्ण करमरकर की ने महज 28 वर्ष की आयु मे ही कर्मकार एल्गोरिथम का आविष्कार किया था। उससे पहले जटिल गणितीय समस्याओं को सुलझाने में जो एल्गोरिथ्म प्रयोग में लाया जाता था। वे उतने उपयोगी नहीं थे और काफी धीमे होने के वजह से वक्त काफी लगता था। कर्मकार का प्रचलित एल्गोरिथम की अपेक्षा 100 गुना तक तीव्र था। आधुनिक गणित मे, भारतीय गणित के योगदान को उल्लेखित करते हुए उन्होंने प्रतिभागियो को शोध के विभिन्न तरीको से अवगत कराया। इंटरनेशनल अकेडेमी ऑफ फिजिकल साइन्स के प्रो. ओंकारलाल श्रीवास्तव ने अपने उपद्बोधन मे भारत की प्राचीन कला क्रिप्टोग्राफी पर अपने उद्बोधन दिया। आज के युग मे सूचनयों की सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफी के अनुप्रयोगों को विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया की का सबसे पहले भारत मे लगभग 400 ईसा पूर्व से 200 ई सा तक, म्लेच्छिता विकल्प साइफर में लेखन को समझने की कला, और एक अजीबोगरीब तरीके से शब्दों का लेखन है। प्राचीन काल मे गुप्तचरों के माध्यम से सूचना का आदान प्रदान क्रिप्टोग्राफी अर्थात छुपी हुई भाषा के प्रयोग कर के किया जाता था। तकनीकी सत्र के अन्य वक्ता मुनि डॉ संयमरत्न विजय महाराज साहब ने जैन दर्शन के विषय मे अपने उद्बोधन में उलेख किया कि जैन दर्शन आत्मवादी, आशावादी और कर्मवादी है। जैन दर्शन आत्म और कर्म के संयोग को स्वीकार करता है। जैन दर्शन कला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि में प्रवृत्तियों के निर्माण में योगदान दिया है। जैन दर्शन की यह विशेषता है कि उसने धर्म, दर्शन के साथ विज्ञान को भी महत्वपूर्ण माना है। जैन दृष्टि से सृष्टि का काल, अनादि और अनंत है, वैज्ञानिक हाकिंग भी काल के संबंध में सृष्टि की यही स्थिति स्वीकार करते हैं। जैन विद्या का महत्वपूर्ण सत्य है कि प्रत्येक पदार्थ का ज्ञान अनेक दृष्टियों से करना चाहिए। उन्होंने बताया की जैन दर्शन ही एकमात्र ऐसा दर्शन है जिसने पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति में मनुष्य के भांति संवेदना माना है। आज इस बात की आवश्यकता है कि जैन दर्शन के सिद्धांत भी वैज्ञानिक दृष्टि से प्रेषित हो। धर्म, समाज और विज्ञान इन तीनो के समन्वय से एक नई संस्कृति का उदय हो।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भौतिकी के प्रोफेसर रामप्रसाद प्रजापति ने अपने विषय उज्जैन के वैज्ञानिकों की विशाल परंपरा का उल्लेख करते हुए

बताया कि भारतीय वैदिक ज्ञान प्रणाली ने इस ब्रह्मांड के विकास के सिद्धांत और गणित और खगोल विज्ञान के मौलिक नियमों के बारे में जानने के लिए पूरी दुनिया को सामने रखा है। वैदिक काल की गुरुकुल प्रणाली में, ऋषियों द्वारा वैदिक "मंत्रों" और "श्लोकों" के माध्यम से छात्रों को ज्ञान हस्तांतरित किया गया था जिसमें पदार्थ के निर्माण का रहस्य और 'विराट पुरुष' ('ब्रह्मांडीय होने') की भूमिका थी। जो इस ब्रह्मांड की मौलिक शक्तियों को नियंत्रित करता है, उसे 'ऋग्वेद' के 'पुरुष-सूक्त' संहिता में समझाया गया है।

डॉ. प्रजापति ने आगे बताया की छठी शताब्दी से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, महान दार्शनिक 'कणाद' ने 'परमाणु सिद्धांत' का प्रस्ताव रखा और 'पूर्ण विश्राम', 'पूर्ण गति', 'अंतरिक्ष और समय', एक परमाणु के गोलाकार आकार की अवधारणा को सामने रखा। तरल पदार्थ आदि के नियम। '0' का उपयोग कभी-कभी गणितज्ञ आचार्य पिंगला को तीसरी-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान द्विआधारी संख्याओं की चर्चा के कारण माना जाता है)। उन्होंने कहा की : अवंती नगरी (उज्जैन) को 'भगवान कृष्ण' के सीखने के स्थान के रूप में जाना जाता है, जिस पर बाद में राजा विक्रमादित्य का शासन था। कुछ समय बाद, उज्जैनी मध्य भारत में खगोल विज्ञान और गणित का केंद्र बन गया। वराहमिहिर (505 सीई - 587 सीई), एक प्राचीन भारतीय ज्योतिषी और खगोलशास्त्री थे, जो कापथा में पैदा हुए थे और उज्जैन में रहते थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तकों 'पंच-सिद्धांतिका' और 'बृहत-संहिता' में वर्णित गणित, खगोल विज्ञान, ज्यामिति और कई सामाजिक मुद्दों पर काम किया। ब्रह्मगुप्त (7598 - 668 सीई) एक भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे जिन्होंने आर्यभट्ट के काम का विस्तार किया और गणित में कई महत्वपूर्ण सूत्र दिए। उन्होंने मध्य भारत में उज्जैन को खगोल विज्ञान और गणित के केंद्र के रूप में स्थापित किया। उज्जैन में एक ब्रह्मांडीय वेधशाला स्थापित करने वाले महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भास्कर-द्वितीय (1114-1185 सीई) के योगदान को कोई भी नजरअंदाज नहीं कर सकता है।

डॉ. प्रजापति ने कहा की : 1884 में, ग्रीनविच को प्रमुख मध्याह्न रेखा के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया, जो देशांतर के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक जहां से पूरे विश्व समय की गणना जीएमटी के रूप में की जाती है। इससे पहले, उज्जैन को भारत में एक समय के लिए केंद्रीय मध्याह्न रेखा माना जाता था और श्री विष्णुधर वाकणकर ने डोंगला को केंद्र स्थान के रूप में पहचाना। चूंकि उज्जैन प्राचीन काल में भारतीय खगोल विज्ञान का केंद्र और समय माप के लिए केंद्रीय स्थान था, इसलिए समय को डीएमटी के रूप में फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए, जीएमटी के रूप में नहीं।

अंतिम तकनीकी सत्र मे युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के अंतर्गत 16 युवा वैज्ञानिको ने अपने शोध पत्रो का वाचन किया। 27वी अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन सत्र के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव थे। समापन सत्र की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपती प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने की। विशिष्ट अतिथि- भारतीय विज्ञान भारती, मालवा प्रांत के संगठन मंत्री प्रजातन्त्र गंगेले, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलसचिव प्रशांत पौराणिक, इंटरनेशनल एकेडेमी ऑफ फिजिकल साइन्स के प्रतिनिधि डॉ. ओंकार लाल श्रीवास्तव, शिक्षकगन, अतिथिगण, विषय विशेषज्ञ, पार्टीसिपेंट्स, विद्यार्थीगण उपस्थित थे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री डॉ मोहन यादव ने अपने उद्बोधन में भारत के गौरवशाली विज्ञान परंपरा का उल्लेखित करते हुए कहा कि भारत उपासना पंथो की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप विज्ञान भारती के संगठन मंत्री प्रजातन्त्र गंगेले ने अपने उद्बोधन में इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इतिहास में भारत मात्र धर्म, दर्शन, तत्वज्ञान एवं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों में ही नही अपितु व्यापार, व्यवसाय, कला कौशल में भी अग्रणी हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय ने सभी को सफल आयोजन की बधाई देते हुए भविष्य में भी इस प्रकार की शोध संगोष्ठी के आयोजन की संख्या बढ़ेगी ऐसा विश्वास प्रकट किया। आभार संस्थान के शेखर दिसवाल ने माना।